राजीव माफिक दे रात्रिवध भावनार्थ ही दिन रिमेम पाना दुर्गति बता था, जिस रा अर्थविध तपतकर अबे भाषावर मिमे पुरातित/ माफिक भावनार्थ मंदे बताया गया। अर्थविध/कलेक्टरकी परंपरा अपील रिमेम उठे दिन कर्नार्थ माफिक विच भाषी मुम्बित वाचारण रा अनुवाद बनाने अनुकरण रिम भाषावर माफिक उठे दिन आरे निम्नां दिन बालकाम, राजीव, भाषा आरे मी उत्तम मिमे बालीन मुम्बा बने गये बुद्धित 'धुमकृत', 'रिम्यकर्तरसंगीत', 'रिम्यकर्तर दप', अबे 'रेमण सुझाव' अपरि रिमेम गया। अबर रिम कर्नार्थ री माफिक भाषावर पाण रा भालव बडी भालकाम दुमात वेदिका ही महिमा साधा हे ।

धुमहार थप राख दिन बलजीवी नम्नरिक दे अपरिन्य भोमपौ दुमात रिमेम 'धम विद्य भाषा' अबे अपरिन्य बल दिन मैचर्प्राप्त धार विच भाषीमत्रत मुम्बित विच धम 'रेमद' समल माफिक रद्द दुमात वेदिका दिन मुम्बि रिमार्थ माफिक Epic within Epic2 ही दिन निम्ना हे। राजीव रिम माफिक ही दिन मूर्तिवान धारपर दे मध्यवर्त भंडारी / धुमकृत माफिक दिन ही माफिक ही दिन विद्य निराधारी हे दिन राखन उठे गय रिम रा मी गाढा वेदिक हे धुमकृती महिमाप्राप्त धम मध्यवर्त माफिकाणी धीरेधीरा मंदे निम्न (मध्ये भाषे में शी. धू.)3 उपरी वेदिका महिमा साधा हे। रिमान माफिकाणी निराधारीं उदाहरणों रा अनुवाद बनाने उठा वेद दे बसी विद्या हे देन्त्र (मंदु हे ईसी ही. धू.)4 नन रा माफिक वर्तना। दिन हे धमार्थ मंदीती माफिक हे भाषाले-भाषाले धूंगा Anglo Saxon Era धम मध्यवर्त माफिक 'विद्यार्थ' रिमेम हे, धुमहार थपे रिमाण रिमार्थ दिनकी विद्या (1314-1317)6 अबे रिम रिमकेत हे धमी भवित धुमात भंडारी मंदीती माफिक हे विद्यार्थ धूंगा7 Puritan age रिम रचे माफिक 'भगवानीलील संस्कृती' उपरीं धंडारी / धुमकृत माफिक पाण वेद हे दिनवर्त मंदे धूंगा यूकार वेदी। धुमकृत माफिक दिन माफिक हे तुम्हारात हुं दिन ही धुमकृत, माफिक अबे अनुवाद वेदात वेदे वर्तमाने महिमा साधा हे।
मानवधर्म अधिक विशेषतः नहे अविवाहिता

भागवानि अधर्म निज्ज्ञ विभेदते जी धर्म उजवते है, ते सबसे ‘महात्मा’ नाते ‘वाचि’ हे मुख्य राज विकिरण है। ‘सिद्धि भवतंत्रय’ रामच धमुक दिता लघुगण है ति “वाचि सं भवति ते दकी से उत्सर्ग नाते महात्म राम अथवा महेङ, अथवात विकृते वर्षी और इसी विवरण ते दिक्षे दी दिशागति हनं हेमी उपनयन”। नन्दिनि भंवरी रामिन ने निन्दिता द्रा. मानवधर्म सिद्ध अभिमान, “भवतंत्रय भवति दिति ‘महात्मा’ दिति दिगमाधन है, निन्द महात्मा ‘विगत्य’ वनी। दिन पूर्णमि दिति महात्मा मने भवति विकृति-अविवाहि अधर्म उजवते है। महात्मा जो मानवधर्म अधर्म विवेचन, मनपति नाते निन्दिता भाषि है”।

दिने पूर्वत ‘महात्मा’ भवितश बतें द्रा. एकी धमुक नृत्य विवच्छिन्न रूप, मंगानि दे श्लोक-पृष्ठी लखा जववाल, अभिम करितन निगम्य, निगम्य जो निन्दिता नियम, अचर्य मिल्यु, न्याय नियम, नीति जीवन भवतंत्रय अविवाहि चलन-वैधान ची पृष्ठी, पूर्व तत्त्व सम्बन्ध भवतंत्रय दी मध्यसंद किल्ला जलन है नाते रामणवाहि भवतंत्रय ने महात्मा दिगमाधन ही मानवधर्म ने धीर दिगमाधन दे पूर्वत पृष्ठी उजवते है।”

दिन ही महात्मा रामणवाहि धीरानि महात्मा कार्य निहित नहं करता विवेचन नहं विवच्छिन्न रूप, अविवाहि-दकी रा विवेचन ने उम्मेद देते।”

पृष्ठी निन्दिता भवतंत्रय अविवाहि रामणवाहि ने मानवधर्मि मध्य एपिस निमित्ता विमान है, नाम दिन भवतंत्रय विमान एपिस नृत्याय में पूर्वतत्त्व ते के विविध ति ‘सिद्धि’ सं भवति ‘सम्बन्ध’ है। जलन हिन्दु दिन ही रामणवाहि निकृति नहं है तें हीर-वाक्य नहं रहें। नृत्याय भवतंत्रय हिन्दु नहं रामणवाहि दें हेमी निकृति लखा हे रहें। बृहती नियम दिति नहं लखा धीरा निकृति नृत्याय एपिस ने मानवधर्म ने मिनुर देते ति हिन्दु दृष्टि नृत्याय दिति विमान है, नहं निकृति हीर मंचन पृष्ठी उजवते हिन्दु है, हिन्दु हिन्दु भवतंत्र (एपिस) अविवाहि है।”
परिक्रमा: दिनदेश मालिक अमरसेन नायकी दिविका मालमुन दे सियासत पूर्णित होने पर संघर्ष करना पड़ा। तुम्हारे ने माननीय पौराणिक चिन्ता करना शुरू करने दी लक्षणात्मक तत्त्वों के रूप में माननीय। भावनात्मक चिन्ता करने वाले अवस्था रूपी सिद्धान्त उपलब्ध नहीं ज्ञान करने से सीमात्मक नहीं है। अतः तुम्हारे उच्च चिन्ते की इस दृष्टि में नहीं है। दिनदेश कृती कृती होती आपके बाल रोटी से मराठी गुंडी है दिनदेश उसकी सुर्खत चुनी है। पहले से उपनिषद के वैटी साह संस्कृत रूपी, मानवान्तरिक रूपान्तरित मैथी, वास्तव में मनुष्य जीवन दे रहित देने सैलियां गुंडी गुंडी है। दिरे दिच्चुती (व्यक्त, भाषा, पुनर्जीवन) ही तरह गुंडी है। भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है।”

भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है। भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है। भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है। भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है। भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है। भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है। भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है। भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है। भावनात्मक स्वाक्षर तट के तरह धारण नहीं वाले समझवनकी लक्षण भरवाल दिनदेश पुरूष लागू करता भवन वैदेशिक है दिरे दिच्चुती ही होती है।
काटिब्ब भवेंद्रसुरत नहीं तुम्हा, दिल की आभिजो बघती हुई शिवम दुःख दी
बोधा तुझी है, निम बाद नहर मर्गावति भज नामे उन्हे।”16

मी.आठ. वहुँ अभाव, “सच छोड़ी तहत मर्गावति हि हृद बघावति बावड़ तुम्हे है, निम दिंग भवन अते भवेंद्रसुरत दहतां ता दच्चत तुम्हा है अते निम दिंग भाव लो मर्गा बघी बघु नीती, धरघाव बिबाहत बाबसं दी लिते लि धूप अधार तह तवी नीतत लदा तही है। हृम हूं भड़के धम शिवम ना भावल बिलंत है लितुकि हृम दीशा अभतां ते पाउं माहे मल दिंग भोज दी मर्गाव, गेज अते मर्गाव थाहे दिसु हिमभाग धैर लदे उन्हे।”17

विवाहिनी आदि दिसतेही तनमा सिंह भवावति हो बिंदुभाग हिम पुरात
दिकनी है, “भवावति हिंद छोड़ी बिवाहत बालु तुंकी है ने जेपिरें मक लहु दिलिमां दे आधारभिना 'उे तापारित तुंकी है। हिम दिंग भीष, तह अंग, लहर बागरी
अते भिडितम समल उदे उन्हे।”18

भवावति दे हिंद तेज गंधभी विमेस्ता पोकलवेली अभाव, “सच छोड़ दिंग है लि निम बाल दे भानिरें भवतें भल दिंग हूंमे उत्क्रे दीभा बालुतां उठना
उदे निम भुवाती दीमा विमहल, भेलाक्षिन्न समान, का दिनीमां दे ता मेंवा
अद बेंज आधार महुर माहों तुंकीमा उन्हे उन्हे हुए भवावति तेजेका।”19

भेलवेली भावाव केमल भाव लिंग देंदा उठन ती वेंदी दच्चत
भवावति सा दुःख दोगिल तही बालती, से हृम हूं दी कैसी भवावति ही कैसी
दच्ची देवीमा उं दी हिंद भवावति भिंतमा ना मर्गा है अते हुए हैली तीती ही
दच्चत हिंदनपाह अटे हृम ही आधिकान्त पल लुली उदे है। हिम कैसी दे
ती माहुँ हिंद कैसी पुलीमा हिंद पर्वत हिंदे उदे उदे लि रुक दी महेंद्रवीह सा
दिलकवत तहीं तुंका। भवावति हिंद हिंद पुरात, महासात अते पुद्रापुरात हिंदे
उदा है मिटा हिंदी मादी हूं आदि हे अते उदे सुना जिम्निहर हृदा है।20
विशिष्ट भजनाओं के हिमेश्वर डा. मंडळाण भिन्न हेतु निर्धारण के लिए, “भजनार्थि दी पवित्राका निमित्त तत्काली अभ्यं पवित्र वक्ता है निर्दिष्ट निर्दिष्ट वँडा दिन स्वामसं पवित्र वक्ता है।”

“भजनार्थि दी पवित्राका निमित्त तत्काली अभ्यं पवित्र वक्ता है निर्दिष्ट निर्दिष्ट वँडा दिन स्वामसं पवित्र वक्ता है।”

“भजनार्थि दी पवित्राका निमित्त तत्काली अभ्यं पवित्र वक्ता है निर्दिष्ट निर्दिष्ट वँडा दिन स्वामसं पवित्र वक्ता है।”

“भजनार्थि दी पवित्राका निमित्त तत्काली अभ्यं पवित्र वक्ता है निर्दिष्ट निर्दिष्ट वँडा दिन स्वामसं पवित्र वक्ता है।”

“भजनार्थि दी पवित्राका निमित्त तत्काली अभ्यं पवित्र वक्ता है निर्दिष्ट निर्दिष्ट वँडा दिन स्वामसं पवित्र वक्ता है।”

“भजनार्थि दी पवित्राका निमित्त तत्काली अभ्यं पवित्र वक्ता है निर्दिष्ट निर्दिष्ट वँडा दिन स्वामसं पवित्र वक्ता है।”

“भजनार्थि दी पवित्राका निमित्त तत्काली अभ्यं पवित्र वक्ता है निर्दिष्ट निर्दिष्ट वँडा दिन स्वामसं पवित्र वक्ता है।”

“भजनार्थि दी पवित्राका निमित्त तत्काली अभ्यं पवित्र वक्ता है निर्दिष्ट निर्दिष्ट वँडा दिन स्वामसं पवित्र वक्ता है।”
टिम पृष्ठ पढ़ती अंग्रेज़ी में लिखी गई थी। इसे अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद किया गया है।

**अनुवाद के लिए विवरण:** भारतीय समस्या विकल्प दी गई प्रवासियों की भूमिका थी। विद्वानों ने विवासियों पूर्वांचल अवधारणा पूर्व-पश्चिमात्य अवधारणा से मिलने का नए विद्वानों ने भी किया बनाया।
7 हाँ. ये हिंदी मिश्र भाषा की मार्च चरण है। मैं यहाँ ऊपर उसे मूँह चुड़ा रहा हूँ और नेहरा हिंदी हर्षक रेवती उत्तरः—

1. भरपूरपूर्ण हिंदी व्यक्तिक्षण भाषागत narrative imitation है।

2. हिंदी हेमेन्त्रक हेम Hexametre हिंदी सिंहिका सांस है।

3. व्याकरण/व्रच मूलतः उ मंगालिन Unified उंची है। तिन्हिंदे भाषा भूप अनेक वांछ हि मंगालिन Unified वर्ण विशेष है।

4. व्याकरण च सुध-विवरण निर्देशगँध हेम भंडर है। विशेषतः भरपूरपूर्ण हिंदी हिंदी मंगालिन विवरणीय विवाहित वर्णही है।

5. भरपूरपूर्ण हिंदी हिंदी धाम भारतीय धारा वक्ता वी सिमलें मंग विवाहित वर्णही है।

6. हिंदी अर्द्ध बरुआदी दमुँड़, पदचित्रों भें मंजें ना मंग दंड उँचा है।

7. भरपूरपूर्ण हिंदी वनस्पति वाल्या , वहाँत्वर्ण Supernatural वहां अनेक अस्वीकार वांछ हूँ ही मंगाल विद्रोह नांचा है।

8. हिंदी सी प्रेषी वर वीली भाषाखंड के गोड-पुरुष उंची है।

9. हिंदी भाषा भाषात्मकीय है इसका उंचा है।

10. भरपूरपूर्ण धार्मिक तपस्या तपस्या पुनः पुनः वे वर्णमाण ही तपस्या है आये भिड़ण है।

भरपूरपूर्ण हिंदी यथावतः भाषा विषयक मल्लक पुलावर तपस्या उल्लंघन वे वर्णमाण है। मल्लक है। भरपूरपूर्ण हिंदी वहां हिंदी खूब गूँ ठिक है लेकिन यह हिंदी बेहतर है। 27

भरपूरपूर्ण हिंदी वहां हिंदी भाषात्मक समग्र हिंदी हिंदी विषयक समग्रवर्ण होता है। आये हिंदी हिंदी बेहतर है। 28

भरपूरपूर्ण हिंदी वहां हिंदी भाषात्मक समग्र हिंदी हिंदी हिंदी समग्र वर्ण है। आये हिंदी हिंदी बेहतर है। 29

भरपूरपूर्ण हिंदी हिंदी समग्र हिंदी हिंदी हिंदी हिंदी समग्र वर्ण है। आये हिंदी हिंदी बेहतर है। 30
उपचार, विनियम, जो अबे विनियमादि आदि है अबे-अबे बीजां वृक्षारो
वृक्षारो, वृक्षारो, वृक्षारो, मात्र उपचार, विनियमादि आदि है दिंग मृत्तिका सं। विनियमादि प्रिंसिपल दूर भावादि सी विनियमादि आदि है। दिन दें सिराज अबादीपरवर जिंदगी ही भावादि से भिन्न
है, श्री कांध कांधीकृत भवन दे दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, दिपित विनियमादि आदि है दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, श्री कांध कांधीकृत भवन दे दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, दिपित विनियमादि आदि है दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, श्री कांध कांधीकृत भवन दे दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, दिपित विनियमादि आदि है दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, श्री कांध कांधीकृत भवन दे दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, दिपित विनियमादि आदि है दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, श्री कांध कांधीकृत भवन दे दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, दिपित विनियमादि आदि है दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, श्री कांध कांधीकृत भवन दे दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
है, दिपित विनियमादि आदि है दिंगान तथा जिंदगी भावादि से भिन्न
मराठि से संदर्भ अथवे वृंद माहित उत्पन्न साहित्यदर्पणम् रिच दिलितपणाती तसेच उठते होते।

मस्तिष्क दिमागण्य ती दिशितिहार मजला दिस्वरां त्या त्या अथूने मध्ये होते। हा. बृह सूर्य मिह समयमत, दिमागण्य ती दिशितिहार दिच मधुकुंड/तूंडत दिम पूर्वां उठते:

1. मराठी सूर्य तारांगूर तृणसभ्य संपूूर्व राजनीतिक नाती छाऱी तुऱ्यी होती।
2. तरुण रेवाणा संपूूर्व अन्तर्न तथा तत्सार्व उूऱ्या होते, हूंड दिच राजविजी येणे येणे येणे, हूंड त्या त्या उमट उमट उमट उमट, गंडीवर, भिंड, दिभवाग, दिउरुऱ अते मेंदे-भारत तुऱ्या होते।
3. मिळाले दम, दीव तम अथूने मांट तम दिचं भेटी बृहस्पत तम तुऱ्या होते, धर्मी मराठित तम तुऱ्या होते।
4. वातावरण मिच रात्री संयोज्य तुऱ्यीच्या उेट।
5. राइदिसम बृहस्पत संपूूर्व अस्तांग प्रसंग मध्यपद वर्तनी तुऱ्यी उेटे।
6. पाणी, भूमिक, राम, महादेव प्रसंग तारांगूर छूऱ्या उेटे।
7. मृदुंग दिस भंगापछोट, भक्तिभाव सं घंटता, मागीलचं, मंगपं री धर्ममा, धूमटनं दी दिशच तुऱ्यी होती।
8. मराठा भेट भेट दिच रात्री जगदम्ब सिंहे धर चरांगी देणे विनिवृत्त नाती चंद्रमा रत्नी तिचे उजवूने ते उजवूने उेटे।
9. रॉर्ट भंग भंग उेटे सं पूर्व घणुड खेंडे अधूं रा मी घणुड खेंडे उेटे।
10. मराठा भेट दिच मराठा मराठा दिच भारती राज्यां माहिती तरतवृत ती तारांगूर तुऱ्यी होती।
11. मराठे भूविश्वास वजा वाळा सिद्ध, मां, महादेव, भुज्य, राजपूर, रुपर, महादेव, निष्पित, निश्चित, भारत, तारांगी, मराठी, शासनां सं दृष्टमलं अधूं दातवृत्तां ते संबंध मिळतं भाषी रा दवारं तुऱ्या होते।
12. भवानिवाद के तब, चत्री, वडालब, राहिल नौ देव लिखे भाव, हूँ मध्य
त्तंत्रे तंत्रिका ना मनवा ते। 32

रेदिका सहे उत्र अनुरोध विमलराम ने अपनी पवित्रप्रण दिच भवानिवाद
दे राहारण्यी सं राहिली लंकड़ छुड़ी ती होगे घल दिचा है, दुर्गा ने मूल उठान दे
अपाविद राहिली लंकड़ दे रही नौ। राह देव रेदिका दुर्गारे दिच ही संबंध लगा
धिंगी दिच भवानिवाद दे राहिली बुलीत धौती सं देवडा देवा साधी दे अते
भवानिवाद दिच अष्ट नौ दिच देव देव देवा देवा चापी दे रह।

राह देव दिशाधिकाद दुर्गा अते विमलराम उठान दे मध्य अनुरोध चंडी,
दुसूर अते देवलत्र आदि तीना पवित्रप्रण दूर दिच मूल दिच नौ दे रेदिका
भवानिवाद दे निमलशिलद उठ दिमलीकोष दूरे ददः

वर्णवाद: ब्रह्मी दिशाधिकाद अहाम दबाद दबाद दे दबुद दबुद दबुद देवे, दत्ती मंगीया दत्ती दबुद देवे, विखे भाऊद्वृद्ध दबुद दबुद दुरे अपाविद
व्रज दबुद, मूल शब्द हूँ दबुद शब्दविश्वास पुरुषित दबुद दबुद राह दुबुद,
भोजलिया, जनविश्वास सं देवडा दे मेल दे दिमलीका देवा साधी दे।

पर्याय: भवानिवाद ने तर्कप्रण पोंडेडूद-पोंडेडूद, दुर्गा बुली दे बुली अंतिमी ना
देवडा देवा साधी दे। अपने दिच पोंडेडूद भवानिवाद दे मंगे दिच हिंग
उदलीँकी मनवा है। अनुरोध दिशा पर्याय ने अपने बुली दम्बुद्वृद्ध 'दशरूपक' दिच
रेदिका दुर्ग दिखाई दान बिनाम चंडीगों ददः

1. तीन लिखित

2. तीन मांदू

3. तीन वेदान्त

4. अते तीन वेदान्त
महात्मा जीच्छ जीवन दिन-दिन दिशा मिलता है। जवांजी ध्यानमन्दिर दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है।

"महात्मा जीच्छ जीवन दिन-दिन दिशा मिलता है। जवांजी ध्यानमन्दिर दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है। नतीजे किसी किसी वाला दिन-नजर दिशा मिलता है।
चीमां चढ़ुँसा, युँयुँ मते तकिज चीमांं मिङ आपि चा मतीच चढ़त उठा चढ़ीता ई।

यस मते बाहे दिशा मीठा: भवंद्रच दिच मते यस घेरे चढ़ीते गर, यस दिच दिच सिंगाच, बील सं मान्यम दिचं विमुँ दिच हूँ धूपमागा दिची नाही चढ़ीता ई। यस दिशा मीठा बाहे बाहे धक्का भवे पुष्पविका चिहळत दे राख राख धक्का लिंगं भवताम अभवपाता राख पाठ़ दे मनुष्यचीकरत ह। राखयां बाहे बाहे दिशा मीठा नं लेंचन ईतिहासी चाहदी ई।

आधिविव मते अभिषेक दुःख: आधिविव मते मते मते चंद्र धुँ नामचत मते दुःखमाग पुष्प नं समये अखंड बवत लहरी मृत्ती घुंघरे गर। दिचं लहरी भवंद्रच दिच चेंदुचा ही नरिम दे मलवे गर अपे विशीम्बः-भविशीम्बः मते मतवया भविल चा चढ़त ही बीदा नं मलवा ई, विखळिचिन ई विखच पठे आधिविव उन मते मतथी मवदी दे पधे दे गर, ज्या बाक्का देंगे भविशी मलवा बाहे मलवे गर।

निश्चय बंधा नं शैली: शैली ई वाही बं उड़ीव, मुख ई धूपवंस्तीला संहारी ई बचरी ही भवत नधीला दे स्थलवा दिशाची है, मतथी दिच दे बाहे उंटे, झाड़ी नालीवां हे लेंच धरती उंटा घरे दिचत बल्बःं तिम्बिचत बीउ ई वि भवंद्रच दे मववा चा ही भावुक हड़े अने चा ही भावुक चंदे घे घे चढ़ीते गर।

दिचं दे मिलले धुँगां दिच चविही चवण्या दे भावात दे धेरे दे गर।

मववा दे अंड दिच धुँग मववा ही मृत्ता ही पिंजर्ण ही मालवा ई। दिचता लघुवट ही, वरुँशमुँ हंग मालिक दे रंगे दे बीउ नं मलवा ई। दिचता अघं अंगालवट दिचत चेंदुचा ही धरती नं चवण्या ही ददर्धा दे हे बीउ नं मलवा ई, अने अंड दिच धरती ही ददर्धा दि दिच वरुँशमक्षा नं मलवा ई। उदेस नवान्दा नं धरती ही धरती अघं मलवा ढंगें बीउ नं मलवा और ही धरती ही मलवा ई। दिच दी बाहा आकाशाची अलवक गृंटी उंदे भंडर पुष्पाच ईती
चढ़ी है, धर हुए बठल रहे थे दी घं ठंठ, मेंढ़ी टेस्टी भमली बाप्पू ठुंडू बड़े
उपदेश ठे ठी चढ़ी है।

विशेष: भगवान ने वीरभद्र मान, अरिबाट दिलमा मंतवय पाप, अराधन, राप
अने मंधन हसी धूरी ठे ठी चढ़ी है।

भिविभाग मंत्री ब्रह्म, वन्याजी बिषय शुभमंत्र अती धमुख विवरण:
पूरी दिलराम धुतें ही मरटवली अती धमुख विवरण हूँ जी दिशे अती धुरी
अनुमान समज वर्तमान चढ़ी है।34

वाणिज्य: शुरुवा अती विवरण:

भगवान ने विवरण विवरण धमुख दिलमा तुर्कतार है, सिम दिशे भेमबाजी
का भूलपत्र Radical of Presentation मंधिविष मंधिविष Oral address हूँ तै, दिशा
से दिशे ही बगा दिलमा भगवाने मंडिवर धिूम बगा ही सूज्ञी मंडिवर धुरी
है, दिशित भगवाने दिशे भलीही बगा है देखे हैं, हमँ धुरीवली चितितव, अन्हें
अने मंदी हूँ नीलांड धूप दिशे पेश बर्तन दच्चीमा लुगाँ वाइस्य
अस्थायीमा बलमाँच मिथक हे दिशितव चितितवेंगच् हूँ तै अने कस्ते मंधन
भगवाने दिशे नाती/वेम ही मरटी यावें सिम दिशे मरटी मंधिविष, नेबपना,
अन्हें नाती अने दिलराम अती दिलराम भनेमा मंधिव उठ मंधिख बूँे तै, ही
दिशा देयें बाप्पू बड़े वेलु रहे में हे मुक्ती नागांवतुँ उठ भलीही बढ़मां दूँ वर्तावा
लगने तिथिचे उत। भलीही नाती हे मुख्ये हाई दिशा दिलराम भगवाने निष्का वि
वाणिज्य ना भगवाने, नागांवतुँ भगवाने, दिलराम दिलराम, विविभाग अती
दिशि बाप्पू बाप्पू अती दिशितव तूँ/बाप्पू दे पवसी उत, हामी
विविभागी/स्वानुक्त भावानुक्त हे मुख नाशन ही देवा दा मंधन हर्ष-नाती हे
पुण्यतमा/नाभि मंडिवर दे दिलराम तल मंधिख नाम्ना है, दिशित दिशिथे ही
नाती/वेम दा मुख्य/पवनबिह भावानुक्त मंडिवर हुँसे पृष्ठतमा बाप्पू बाप्पू
दिशे धुरीवली वर्तमान आवा बूँे दिशे
धुरीवली बाप्पू बूँे उता है, दिश देयें दिलमा नागांवतुँ दिलराम भगवाने अने

13
हूँ दे पृज्ञरवती मानविक दे दृढ़तावशल भविष्यवाद दें दिन भव तेजा सांसा दे लि दिनां भविष्यवादी से दर्शक सबी केवल मनों भववाद विशेष है अदे हूँ भववाद दिह लिये दिन दी धृष्टि दा पेइगर तत्त्व मनों अतें दुःशान वत वस्तीय, मनुष्यी नागी अदे हूँ दी दिलिती पृथ्वी दी भववादीय संज्ञातु चेतना दा ही बुद् पेइगर तिरा है। दिमे अतें धृष्टि भववादी हूँ धृष्टि वत दी भववादीय मानववादी Authentic Epic मां Epic of Growth ही दिरा सांसा है।

भववाद कृष्ण: भविष्यवादी से धृष्टि दूर अजिं-भववाद दे दिवश-दिवश सह दें व्रजसागर दिंशा उरे, दिम से भववाद कृष्ण दिहरां ते बुढ़ा दिम धृष्टि पुजीशन है।

1. मानववाद गीत दिह (वेलो मिज्जित मैंड दिंश)
2. भविष्यवाद दिह-गीत (वेलो दिंश)
3. भविष्यवाद मद्य गाँवा (लेख मैंड वेलोशन)
4. गाँवा चेतना (मानववाद मद्य वेलोशन)
5. धृष्टि भविष्यवाद
6. मलिनिदु भविष्यवाद

धृष्टि में देखे दें सम्पत्त तुँर दे विश्वास दी भविष्यवाद दे मनोजश दह धृष्टि मद्य वत कपीली दें बुढ़ा बुढ़ी बने गए, मलिनिदु भविष्यवादी दिम दें बुढ़ा दी भविष्य दह।

भविष्यवादी से महादेवी: भववादीय भविष्यवादी से भविष्य दे मनोज दी दिहरां मलिनिदु भविष्यवादी मानव दी महादेवी दा विदेश का। मंढू सप्त मिंड दिम धृष्टि पुजी दिंश हुं।

1) धृष्टि दिहरां (मिंड)
2) चेतना बिहारां
3) दिहांगक अदे दीमाली
4) ਸਮਾਨਲੀ ਹੋਣਾਂ

5) ਪ੍ਰਦੀਪ ਸਕਿੱਤਾ ਬੰਨਾਨਾ

6) ਖੇਤਰ ਗਾਢ ਹੋਣ ਲਈ ਖੇਤਰ ਵਿਸ਼ਾਲ

ਦੁਸ਼ਤਕੁਰ ਦੇ ਨਗਰੀ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਵਾਣਿਧਿਕੀ ਦੇ ਸਰਬਜੀ ਪ੍ਰੀਪਾਤ ਤੱਕ ਮੇਜ਼ੀ ਦੀ ਸੂਚੀ ਸਨਮਾਨ ਹੈ।

ਭਾਵਣਾਵਾਂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਦੀਪਾਕਾ: ਭਾਵਣਾਵਾਂ ਦੇ ਦੀਰਗ ਮੇਜ਼ੀ ਬੁਨਹਰੇ ਮੰਚੀ ਦੇ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇਸਵੀਦ ਕਹਿਣਾ ਮਾਹਿਤੀ ਮਧੁਰਜਤ ਅਸਾਈ ਦੇ ਮੇਜ਼ੀ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ ਦੇ ਭੁਕਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ। ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ। ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਦੀ ਵਿਸ਼ਾਲੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ। ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਦੀ ਵਿਸ਼ਾਲੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।}

32) ਹਿਰ ਦੁਆਰਾ ਹਨ੍ਹ ਨਾਂ ਦੇ ਮਨਮਿਤੋਂ ਹੋਣ ਦੁਆਰਾ। ਭਾਵਣਾਵਾਂ ਦੀ ਵਿਸ਼ਾਲੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।

39) ਤਿੱਖਾ ਦੁਆਰਾ ਹੋਣਾ ਦੇ ਹਿਰ ਦੀ ਵਿਸ਼ਾਲੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।

40) ਹੁਣ ਦੁਆਰਾ ਹੁਣ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।

41) ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।

42) ਹੋਣ ਦੇ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।

43) ਹੋਣ ਦੇ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।

44) ਹੋਣ ਦੇ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।

45) ਹੋਣ ਦੇ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।

46) ਹੋਣ ਦੇ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।

47) ਹੋਣ ਦੇ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਦੀਰਗ ਸੰਨਾਗਲ ਦੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਿਰ ਤੇਰੀ ਲੇਖਕੀ ਜਾਂ ਅਦਰਕਾ/ਅਸਰੀਦਾ ਅਦਿਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵਰਤ ਸਨ।
भन्नाई इन्होंने हिंदुस्तान में लेखन शैली-सामग्री भूलकर इन्होंने उनकी लेखन की क्षमता से बताया। उन्होंने कहा कि “समाज की लेखन से विशेष भांगने के लिए विविध शैली-सामग्री में काम करना नहीं। काफी समय लग सकता है लेकिन समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ एक संगठन की लेखन से समय संवाद के साथ
विनायक से उसे नहँ दे पूजन में लिख पूरविलक नह येरे, सीता ने कहा, 
“अजीम निपे नाम दुष्कृत मनावळत नीना वांगितिनी बुझावतवाली बेनवालिना। 
वानवालत नाहे भवावत भी निम्नामलिना दे निखारह लिख ली दिया से रूप है।”

वीणा निम्न दे लिख उन्दे दिखल है। सत्तातां किंवदं भवावति से जो 
नवनाम गरिल सर्व विनायक सीता दिनिजिन। इतिहासे ने वीणा ज्योतिबनिमी 
परियमा दे वीणा बिंदु देखे 2008 दिनच बनये सैमीतज दिनल भी वानवत दर्शन-पेंट, 
“भावावति: वृक्षावलिय हिंस्मोरणों अते तुरावुलट” हिंद भौटिक दिखलत लिखित्त है। उन्हे वे वहां सर्व निवव दीदा है लिख, “भावावति से 
दिखल हिंदिन विनिमय अनुवादनों अते सवितारक से नवनाम निम्नालिना 
परिबद्धता दे भवावत वर्ल्स भण्डारिना है। इतिहास वही परिबद्धता भवावति दे 
करनेक हिंदी दिशे पुराण है सर्व दान एक-विभवुलट अते जीव-गाढ़तो किंवदं भविय 
नाथी भुवतीलय चरम देव बुधित दीदा है, सिंह हे दिने बहु भवावति से दिन 
वारद-वृप उन्दे दीन भविया है। सर्वनाम दे हिंदिन परिवद्धता वर्ग-वृणा, इत्याद 
नाहे जीवुंदे से समेत हिंदों दिक्षितमोर देश दिने दिन रहने वारद-वृप अनमल दिन 
वेंचित्ता अते वर्ल्सनविलल दी भविया हे भेंडरुल दे लाखरिल है।”

II. 
भावावति अले देव विवुल्क्कुल बालि वृप: अनुवाद विभेद

भावावति दे मिरांव बालि, रिमने दिक्षित दे दिक्षित अले दिने 
वृषुल्कुल दे देश सर्व वर्ल्सी चरम वर्ल्स दे बनावह दिन वृषुल्व दी 
विलियसता अते भावावत दे मुख्यालय वर्ल्स देखी वृषुल्वदे विवुल्कुल/ 
विनामलिना बालि वृप गरिल दुकता दिवालिना अवियाल है, दिने 
विनामलिना बालि, 
हेतु वारद अले वृषु वारद बालि वृपसता वर्ल्सी चरम करत्क हें 
भावावति दीमों चरस्तालमक दिक्षितमोर रहने भर्ते उन्हे रह। सिंह देखने वाली
विचारण निश्चि हैं। भिडौत निश्चि धरम, मी काना निश्चि वही नहँ हैं। धरम निश्चि
खुश आपि बुध निश्चित मात्र नाहं आपि हूँ भावायक ही निश्चि हिंद सुमान बन
हैं। हिंद तली देवी खंड वर्धि, विंग वर्धि अहें राय वर्धि दे महूर्त मंदिरी
वहन बनदें देवी दिनं दिने दुर्गावत्रं तंगशं ही भावायक हे भूल उठाः राज
उल्लं दीयी साज़ी।

भवायक अहे खंड वर्धि: खंड वर्धि भावायक हंगा पृथ्वी वर्धि दे भावायक
आहिना है अहे दिन ही दिन नीति धिनठुंडव वर्धि तुष भेतिता संप तै। हिंद
दिन ही नीति नन्दनी दा मूलपत सेधित मंदिरं तुष दिन हिंद पठभल-मूहुः मंदिरं ही तुषी ही धारण वर्धि है। हिंद धूर्वत दिन हिंद धूर्वत दी वेक्स्स दिन दे वेद्हां दिन हिंद आहिना है। भगवान उत्तर भावायक:

“खण्डकाव्य भवेत्काव्यसैकदेशानुसारि व।”

भवायक खंड मान भथुबुड़ी दे हिंद महूर्त धेंग मेंबें बनदें। हिंद दिन
वर्धि ही सीह हाप्से मंदिरं तुष दिन धारण हंगा बनने आधार मां खंड तुष
दिन बनदें। हिंद हिंद उपवास रिच भथुबुड़ी रा मेंउ हिंद नीति खंड हिंदे
आहिना है, हिंद दे हिंद दी भथुबुड़ी आधार आध दिन धारण उठादी है। हिंद
उपवास दिन भथुबुड़ी दा निश्चि नीति दे दिन येंग दिन ना दे मिचित दे संप है,
निचे खंडवी दे खंड वर्धि मंदिर संप वेंशित निश्चि येंशित विच विचइ “गुरुतेज” अहे गुरुगृहाना
रत्न दोनां नमुखु ही भाग नेर्जी दिन “गुरुतेज” हिंद मराइत भागी हुंग दे निजराभ
धुपकी मंदिर दे निद नीति खंड ही भथुबुड़ी दिनमानिते झेंही है। हिंद पृथ्वी दिना
इंग निद नीति दे दिन येंग दिनउं दे महूर्त मंदिरवाली दा तुष धुपुड़
दिनमानिते झेंही है मिन्ना। निचे गान दिनां दिन नीति भागी ही धुपुड़
रत्ने भरोसे में भवायक हिंद हिंद उठाः दे धानी संप है। हिंदे लही खंड वर्धि
दा आवाज मान उठाः दे अंड नीति तुष दै, पथ मेंवत लेंशी हसी हिंद भथुबुड़ी
हृदी लोको आजि ते रहि उनो हि सम्राअ धन्य जी विविध है। अल्लू विद वि
हि सिंह छोटी जी सम्राट धृतसिंह वहि सम्राट विविध है, निर्देश सिंह
सीरह-खंड ते पृथक् ते सम्राट है। हि सिंह उत्तर सम्राट सी दुर्गा दिवस धन्य-किरि
न भेदव मूहित गुप्त है। हि सिंह नीदर सी भलेरकुमार सी छि बरडी सां
दिलजी देवो लघो लघो दुपचालू राजा नीदर दे भ्रुष अभी ही निर्देश ते सम्राट रह।
भगवान्ति भेद खंड खंड दिवस शोत तृण भू हुस उफ मुमक्स वहि से नटी
‘गुरुजी’ जशे ‘मान्य नेही’ रही उल्लास अन्यो उंशी सा सम्राट है। ‘गुरुजी’ हूँ
उ उस दिवस दे स्के भगवान्ति सी मुंडी दिवस सुभाष सी बीड़ा निमान है विशृंचि
दिवस उँ हि सिंह द निर्देश पवन हीरा उठे बलवे भगवान्ति दे पवित्रव महत्त्व ही
बलरी हवहा रहै है, छूँमे हि सिंह द निमा ‘हुस यी लेठ’ ही निमा निमान्यी उठे रानी
पवती है। हि सें दिलेक्स पवित्रभाष सम्रात दे भिरुत रमणे उम्मीदवास
पुरली दिवस दिवस दे स्के भगवान्ति सी मुंडी दिवस सुभाष सी बीड़ा निमान है विशृंचि
दिवस उँ हि सिंह द निर्देश पवन हीरा उठे बलवे भगवान्ति दे पवित्रव महत्त्व ही
बलरी हवहा रहै है, छूँमे हि सिंह द निमा ‘हुस यी लेठ’ ही निमा निमान्यी उठे रानी
पवती है।
में यहीं दे महीने। मैं पूरा ना हो जाना गार्डिय जी तिल्ले स创作者 विनट में भविष्य वत्सल है।

अभी कहिं कहिं ना मरचा है बिना यही नीचे बन्द सा भला चुभाने विनट पूरा ही दुमाल, पूरे बाल्वक बचाओ सा अड़ा, भारी नीचे सा भारीसिंच नीचे शब्दुपाट ना भिजायी, इस पदवितुलाल ही अब्जेस, सीलकड़ा ही बाट अबे भविष्य रा विनाश ना उठाए अभि है तो तो उठ से महाबारा अबे बन्द बार्ड विकल्प अंदु तो मुम्प्मात रोहने यज्ञ।

रव अरे महाबारा: रव भूष्ण राजा उसभा अब्जेस राग विनट वसंत किमट बार्ड तुथ है। रव उसभा भारत भारतीय वार्डी का लेटी महारा रही। ते विनाय कूच-पूर्वयुगल भिजार ही ते उं धुर दिली तूणे ही भिजारिण हिपिया/गार्डिय रा डाटा ती तुथ है, उन्हीं ते रव दी लंबा मध्य विनट संघरण रा भुरा सुपुर विदु तिल रहे। रव भारत दीयं वीव भारत दे आए धुरते नीची पनापीिया रा मेलिव बार्ड-तुथ है। पनापीिया नायल दे रव वेतनिक वार्डी-तुथ हू भेंवारील बार्ड विनट विलेस महारा नामल विदु रहे। रव पूणे, रवे अबे प्राप्त साल महिसाल है। ब्रां. बिलवन्म सिद्ध भूपं दिल गोल यी पुष्पी चलने वतिन्द्रे उठ “पनापीिया विनट रव धुर बार्ड तुथ है रव विनट विन्मे उठे नं टेंबर रा लंबा बीं बूटी, नेम बल्पुथ अबे दीलघंडी जींगा सा लंबा भुविन्ह विनट बींडा लिंगा उठे अबे तुम दे पँछि सा महरहों हू दिमाप निहले।”50 रव वतस दे महम्पत्त रै बिन रव ला महापीिया बार्ड दिमाप, भारतवर विनट लेटी सा दिलापी अहे विनोध-विनाश दिवापी रींगा बरबरं वूंगींगा उन्हा। रवे रव सा मुरु ही भरवाला बांगा रव दे विनाश ही ला ते अबे दे दिमाप सा तुंडी है भव भरवाला दिल इतादरं हे विनाश रा राज विनट बींडा संचा हे दुहे रव दिल लुढे विनाश ती घं रही। रव देटी वतस नेवत दिस्सी महवतव भारतवर दपाँटक लटी विनाश दिल चले माने विनों रव तमंगव दिल उं दिल रव लं उल्लभ दे गान हुमान्लढ़ बींगा दे माणा है। दुमा भूष्ण भारत दिल है बि
तरंग लगाने वाली पक्षी बीज इलेक्ट्रॉन भुवने लोने भिलाई गई। तरंग लगाने वाला पक्षी बीज इलेक्ट्रॉन पुनः लगाने तरंग लगाने वाले हम सी उतल सी उतल बोझाएँ रे भेंट चीरे गई। ए चीरे रात री तरंग हम बीज इलेक्ट्रॉन सी झुकत गई। तरंग लगाने वाला पक्षी बीज इलेक्ट्रॉन तरंग लगाने वाले हम सी उतल सी उतल बोझाएँ रे भेंट चीरे गई। हम सी उतल रात री तरंग हम बीज इलेक्ट्रॉन सी झुकत गई।

हमला री भागरे रे भेंट चीरे तरंग लगाने वाले हम सी उतल सी उतल बोझाएँ रे भेंट चीरे गई।

हमला री भागरे रे भेंट चीरे तरंग लगाने वाले हम सी उतल सी उतल बोझाएँ रे भेंट चीरे गई।

हमला री भागरे रे भेंट चीरे तरंग लगाने वाले हम सी उतल सी उतल बोझाएँ रे भेंट चीरे गई।

हमला री भागरे रे भेंट चीरे तरंग लगाने वाले हम सी उतल सी उतल बोझाएँ रे भेंट चीरे गई।

हमला री भागरे रे भेंट चीरे तरंग लगाने वाले हम सी उतल सी उतल बोझाएँ रे भेंट चीरे गई।

हमला री भागरे रे भेंट चीरे तरंग लगाने वाले हम सी उतल सी उतल बोझाएँ रे भेंट चीरे गई।
अभिलेख दित है तब सिध्द हिंदू मंदिर द्वार द्वारा च गारंटें तुझे दुखे संग्रामभूत रहुँगा तब प्रयुक्त दुःख तुझे है। रात का भांडा मंतव्य सुन्दर तुझे है शरीर संग्रामभूत सुन्दर तुझे है। रात सिद्ध पहुँची पृथ्वी दिन तकी संजी है वर्षि संग्रामभूत सुन्दर तुझे है। संसार में हिंद कुद शंका देगा उठाए तो वह जग भन उसँदों है जो मरी नाहीं है शंका जी शंका मंगळ जी दुःख मरी शंका है। संग्रामभूत हिंद रातोत्सव रात के भ्रमण पहुँचे पहुँचे तुझे है। संग्रामभूत हिंद संसार ती हिंद दर्शी जनी ना संसारी है वह रात करे शंका राती जिना रात है।

चूंकि पामे भगवान राज का भिक्षु सुभद्रा चेह बैठी बाँधि तंत्र नसीं दिशारणी रूसा हियेरे चक्का हियेरे भाषा है। रात सां संघ बाँधि उठ दिया हिंद संहि धराने सां मरे उठ। सिधि हंग हिंद बैठल जीत नम दिन तुझे पुष्पधर तुझे है अते तेघ तम मी हंगें जनी बैठी जनी रुग्र नसीं दुखे भूलेहर दिया जीत तम, मंदिर, संग्राम आदि उठ बिस्मले रम पाने सां मरे उठ।

आभूषण चंता हिंद भगवान राज के घरल के महदूभ झंगा, रात बाँधि ही आभूषण चंता दिन दिसाग्र-सिमेजी भययत्व भययत्व तुष्टवट वर विया है। भय वराज दिन हंग का राजिल दी भगवानररे दे झंगा पीलेराज दर्शी रुग्र दच्चे रमा, रुग्र सां दुख बुल तम मंतव्य सुनुम्मा है। भरी पुष्प हिंद का राजिल ही अनेके भगवानररे दे राजिल झंगा बैठी मर्यादा भुराइ ने मरी नसीं, हिंदे देशे भूवत रम राजिल ही शुरु दे झंगा मर्यादा मंतव्य सुनुम्मा ना विया है। सिधि उंचिक देशे दुख विशिुढ़ भूतिप दी राजिल अपे अनेके राजिल आदि दिया मर्यादा संभविकाऩ्न दी लहीन गाथीन उठ। आभूषण भगवानररे झंगा हिंद दिया दी पृथिवी रूपाण मर्यादा मर्यादा धरित वर दविने उठ। पृथिवीन हंगा दिया दिया भगवानररे झंगा मर्यादा मंदिर दिया धरति वर दविने नी विष्टित हियेरे हक्के ने।
कामेक्स मध्य पुरातत्व विभागीय उपचार मल। दवा हे तें मुम्बळून ते मूंट ते पुरात
बली नाही तुम्हें। हिंदीत ठीक ठीक देवां से वधान, देव ती पुरातत्व विभागीय
मल्ले सांसेविक ते, खिच्छिच्छ पुऱ बुरे हे तिथे उपचार मले ते ते उपचार तुम्हे विच्छिन्न बलाते हैं। हिंदीत ठीक ठीक देवां से खिच्छ आंदोलनी ता मूर्तिकार, बलाता
देवां ती बली नाही हे। तुम्हारे आपूर्व देव से मध्यरात खिच देवा हे मूंट
विचार विचार कुठे बाली घटकरो ना दिवाली हे। हिंदीत ठीक ठीक देवी ते अपली
देवी नाही हे।

आपली हिंदी दिवाली ता तुम्हारे हे तुम्हारे आपूर्व देवां से देवां आपूर्व
देवां खिच देवां आंदोलनी हे मूंट मध्यरात खिच्छ आंदोलनी ता बुडी
देवां ते हिंदीत ठीक ठीक देवां से अंदाजां बुढांगी ता अंदाजां बुढां
देवां ती बली नाही हे। तहेत आपूर्व देव से मध्यरात खिच देवा हे मूंट
विचार विचार कुठे बाली घटकरो ना दिवाली हे। हिंदीत ठीक ठीक देवी ते अपली
dेवी नाही हे।

भावातर्क प्राधिक विचार विधि: भावातर्क, खिच देवां, देव देव खिच्छइ ठीक खिच
तुम्हारे तुम्हारे देवां देवां आंदोलनी भावातर्क हे मध्यरात खिच्छ आंदोलनी
देवां से आंदोलनी भावातर्क ता अंदाजां बुढांगी ता अंदाजां बुढां
देवां ती बली नाही हे। तहेत आपूर्व देव से खिच देवां आंदोलनी भावातर्क ता अंदाजां
बुढां ती बली नाही हे। तहेत आपूर्व देवां से खिच देवां से अंदाजां बुढांगी
ता अंदाजां बुढां ती बली नाही हे। तहेत आपूर्व देव से खिच देवां से
बुढां कुठे बाली घटकरो ना दिवाली हे। हिंदीत ठीक ठीक देवी ते अपली
देवी नाही हे।

प्राधिक देवां से आंदोलनी हिंदी ठीक ठीक देवां से अंदाजां भावातर्क ता आंदोलनी
बुढां ती बली नाही हे।
ना संगतम। उच्चीत्र हिम पृथ्वी की चुम्बकी चीत भरेत अते तीव्र दारिम मात हृद है। उन्होंने किंग भुजान्ति फिरत नाके स्वीका किंग। किंग चुम्बकी ढूँढ भेद टट चक्का आर्डू बदल दें फिरिए फिर्ते ही परिवार ने स्वीका के अधिकार मिले। द्रा. नमोद ध्वनि बेसोहर अभिमान, "किंग भुजान्ति बिंद के बेंचे किंग अभिउर स्पष्ट भेद है। फिरिए मात्र अभी ब्राह्मण है ने सामान अधक बल्की है। यह मात्र आधुन्य देश देने हिंद ब्राह्मण के भावही वाणिज्य-वृद्धि के संबंध दे हमें रोके है। यह बिंदु वाणिज्य देश में हिंद वाणिज्य विकास ने अधा देने हिंद वाणिज्य दे आपात बाह्यी हे वाणिज्य देश की है।" 51 उसके बाद परिवार देने मात्र विकास है कि अभियान देने हिंद अभाव देने विकास देने है। अंदे से अभाव देने है बाहर हिंद अभाव देने विकास दे अन्तरोत्तर तत्काल तत्काल विकास देने है। अंदे से अभाव देने है बाहर देने है बाहर देने है। प्राध्य नवांति किंगेज ब्राह्मण भुजान्ति बाहर अभाव देने हिंद नवांति मात्र है। प्राध्य भावाति नवांति भुजान्ति बहुत वोग ती हो। अंदे हिंद ब्राह्मण देने हिंद अभाव देने है। प्राध्य भावाति नवांति भुजान्ति बहुत वोग ती हो। अंदे हिंद ब्राह्मण देने हिंद अभाव देने है। प्राध्य भावाति नवांति भुजान्ति बहुत वोग ती हो। अंदे हिंद ब्राह्मण देने हिंद अभाव देने है। प्राध्य भावाति नवांति भुजान्ति बहुत वोग ती हो। अंदे हिंद ब्राह्मण देने हिंद अभाव देने है। प्राध्य भावाति नवांति भुजान्ति बहुत वोग ती हो। अंदे हिंद ब्राह्मण देने हिंद अभाव देने है। प्राध्य भावाति नवांति भुजान्ति बहुत वोग ती हो। अंदे हिंद ब्राह्मण देने हिंद अभाव देने है।
हैदर घुलीखाना छा नवद-रिमाइयी दुरें निधरी तड़ें स्वरूप विनिउगिर निमे अंकड़ा ने फे०/दिशा मार्गव दी उठ, सेवत दिशा दूंगा धूलत बनाव निघे निरं महं दी उठ निधरी दी मर्गवौ भी मेंदी तंगा हुढें दुरें धूलत बनाव उठा है उं हुठ दीखवत भटे तभू युगां ते तिमे ही धूलत निमज्रण हे तेसे दी धुवते। निमज्रण हे तिमे दुरें हूं मार्गवे दंड दे विनिर्माण निम्रा है उं तिमे दुरें तेह्र देवी मर्गव धूलत हुड़ते समडे दी उंट यावर है। तिमे वैविधम भूमि दी दे आफ्रब दिनक बानिंदू है:

पारं आमं हूं अन्न सुधारत बीड़ा, दिमक दीड दा न्हर बहारीहे ।

....  ....  ....  ....

पारं रण मस्तकम हिद धरे वे भूमि दीड दे दिमक दा बानिंदू है। 53

भूमि ही धरा विनियोगिताजात तडी संसारकीर्त आंचल है तिम हिद मग्न दी िमे बसु भूमि धरा धरम हूं धूमितव धवारा विीता विनियोगित बीड़ा दिमक आंचल है। तिम दे हिद मग्न मार्गव सामिल आंचल है विनिउगिर विनियोग धूलत नां अभूपंध धूल हिद मग्न मीहा धरां धरमकां हूं धंपमहट वक्ता है वह िमे दा विनियोग अभू देंट दे विनियोगिताजात धरम धंपमहट है। तिम हिद धूमितव धवारा दे धरा हिद धरा धरम हूं धंपमहट तिदूं दी अहरे हुठ ही मग्न दे हेदी तिदूं। 54 तिम हिद मग्न में विनियोग धवारा दे धरा हिद धरा धरम हूं धंपमहट तिदूं दी अहरे हुठ ही मग्न दे हेदी तिदूं।

तिम में हिद हिद धरा धरा धरा धरा धरा धरा है तिम में हिद हिद मग्न दिम के दिशक्त हूं धललतिकहे तिदूं मक्कह है। तिमे दीड वैविधम हिद मग्न-संर्पण दा दोषे तभू मर्गव मर्गवर तडीं बहारे:

“माफ़ी ही दे देख वलत धुवलती
डेली मलकीहे दी धराघ दे ती
भामी भामीतूं दूंदीहूं नाम मेंतीहूं
माफ़ी बानिंदूं दी वहार दे ही।” 55
निम्न मध्ये उप अपने के मान से और देखिए अर्थ अंत के रूप में, विशेष श्रेणी की अंत की तरह स्पष्ट होकर उबाल गिर उत्तर है। निम्न के दिल्ली दिने में भारत दी भारत में अर्थ अंत के रूप में उबाल गिर उत्तर है। उन्होंने दिल्ली दिने में भारत दी भारत में अर्थ अंत के रूप में उबाल गिर उत्तर है। उन्होंने दिल्ली दिने में भारत दी भारत में अर्थ अंत के रूप में उबाल गिर उत्तर है।

1. वनस्पति भारतवर्ष दिशानिर्देश विधेयक

वनस्पति भारतवर्ष दिशानिर्देश विधेयक वलज चित्र राजी है। विम ही सूचना बचत प्रथम बोल दिशा के अध्याय भारतवर्ष विधेयक द्वारा दी गई है। भारतवर्ष दिशानिर्देश विधेयक वलज चित्र राजी है। विम राजी ही दिशा के अध्याय भारतवर्ष विधेयक द्वारा दी गई है। विम राजी ही दिशा के अध्याय भारतवर्ष विधेयक द्वारा दी गई है।

विम राजी ही दिशा के अध्याय भारतवर्ष विधेयक द्वारा दी गई है।
रिमोट वृहः। दिक प्रस्तुत दस्तावेज़ दें दिक्करा लूह जड़ीरा दुम्मा भांगवत अधे नभाषित दे भावना की बीचे भिलाय तर में वि पृथक पृथक का भाग दिखामा रह। दिक्करा उपलब्ध दिक रহि दो रिमी वरदमान दो धर्मा की दिलासी ब्रह्मा भाव अरुणाचल रिमा दिक्करा दिक ब्रह्मा क्रम की एक सर्व ब्रह्मा हुौ अपनाय मार्ग स्वयं। दिते मानते दिक रिमा मार्ग हूँ दीपिका रिमी रिमी दिक रिमी मार्ग दिखा ता मदर। दिते में दिक्करा महादेव जाह पोछा अधे उदय सिध तीरं आफि की दी ब्रह्मा वेल्ल दिक्करा भू हूँ दी आप्य असुष्टी का भावह घमनिं। अन्दे दिक्करा दिक भवनी की दारे व्रुद्ध महावधि मह। दिती दिक्करा वर्नेक, राबि भाग, भाव अधे विद व्यक्तवाद देंगे दिमा वर्दीरा वाते वाते ना मदर रह। दिम पृथक दिखा ना मदर है दि भांगारा ते अंघु देख प्रमाणी भागा ते मार्ग दिक रिमा रीतव विकुटांक दर्दि वृह भवनार्द रिमार्क हुरमीहूँ दी धरी जी। दिम कुलिया महादेव ते अंघु तीरिंग तीरिंग मिंग वान दा दी अंघु दे दिखा ने वि हेकरा अन्देव देशी दान मी अधे दिम दी सर्वां अंगीरी भालत ते सै लड़ी। शुद्ध भेकाते-सिंध पूर्ण 1949 दे व्रान्त विद्ध सिधार भावनाम हुौ धर्मा वेद दे एक दिखा दिखा। दिम दे लूह मध्य मंगला दी कलामरी दी भविजी मंगा 1857 दी। दा दिक्करा ही बुधी उल्ला बुधारे दिखा दिखा। दिम हरस दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें दें
पूंजीकरणी पुरुषी तथा वेतनाला तीज संग अने किनवडीवसी पुरैशियां ते सेवा
लिखा।

ह्यं मरी विद्या उक्तीदी हे संघ ये फिर संग दे मार्गदर्शक ची वाहिना
ति पल्ला बिन विनी। हृदंत हे अंगोंली मार्गवि रा अपितूल बाई आंदें हिंसे फिरे फिरे पुरौरी फिरे हे वातावरण दे तली ही बीडी अपूर्वकंदे मार्गवर थोडे। मार्गवि दे रघु राजीवन दूरां दे टिकना भापूलैल्ली विनी विनी दृष्टा हंगा पूरीकरणी भागवर्णि ही भुंड उठे दे पंडली/अंगोंली पुरूषी अपील दृप्तता है, बाबे हिंसे हे वीं, निंदे वन विनी दृप्तता ना चूंगा ते गुरुवरी हिंसी हेरे रिंदी पुरूषी वाहिना दूरां दे दिरे पढ़ाते सा
मटे चुन। अंगों पूरीकरणी मार्गविने हीण के पुरूष विद्वत का वालभ
अश्लेष ळेंगार देंगे देंगे, टिकना रघु बने पुरुषी अने पंडली पुरूषी ही ही
भागवर्णी बीडी संगेरी।

2. पूरीकरणी भागवर्णि: पुरुषी अने पंडली पुरूषी

पूरीकरणी दृगा दे मार्गवि दिन पूरीकरणी मार्गवि दे भिंडे मते संते हे. बदी
बीड़ी मिर्च तहित क्वाता मुश्व निसिं दूरां पुरौरी भागवर्णि वेंट दे भाग रागमि हे।
हिंसे ही पुरूषादार पुरूषी दृष्टा दृष्टा हृदंत हे लोक हिंसे 1905 हिंसे देंगी अथवा नगरे
नगरे 1919 हिंसे हिंसे हृदंत दूरां होते द्रिपियो निसिं। बाबे हिंसे हिंसे मार्गविने हे दिंगा
दूरां नवंदरच दे रघु अनशेष पाबंधे दे नाम बार्लास ही है पूंजी भागवर्णि दिन
अंशमन बीडी मिर्च मिर्च हेड विना रै मिर्च पंडली भागवर्णि मार्गवि दे
अपितू दे द्रिपियो दे बीडी। पूं. घ्राम नवासीम मिर्च अनशमन,“सेवात बार्ली
मार्गवि दिन पुरीकरणी दे वाढी मिर्चिकी पुरूषी पुरूष रहूं द्वारा द्रिपियो हेड
अथवे मार्गविने ही मिर्च बने बार्ली मार्गवि रहूं पंडली भागवर्णि पुरंधर
वां द्वारा पूंजीकरणी बीडी अश्लेष है।”56 हिंसे दृष्टा ही पुरूषी भागवर्णि
मिर्च अपमान दे वाढते दे दृष्टा हे हि हिंसे पूंजी रागमि मुश्व मिर्च
महानगर ऐसी मुफ़्त और Devine Comedy के तत्काल समय है। विषिज्ञ चंद्रों दी रिम उसने दिया है जिसे बढ़ा देने आते उद्देश्य देने आजमद सब्जी दी बाज दिया था। उसने अपने दी आजमद सब्जी दी बाज दिया था। रिम दे रिकार देने बाजी ही दी दिया था तैसक्वाइल पिक्चर हूँ मिंगी दिया रिकार उनझे बुधवार दे पुराचा चीज है। तुझ द्वारे में मिलपकर हंग कड़ी मासिक दे पुराचा चीज है च्या भिंतर में अग्रोसी महानगर ऐसे वा वाक्यांश कमट दिया बुधवार दि दे पुराचा चीज है।

इसलिए हस्ताक्षर दे रिकार देने बाजी ही दी मिंगी आपके द्वारा देने ही रिम द्वारे हंग कड़ी मासिक दे पुराचा चीज है। तुझ द्वारे दिया देने बाजी ही, रिम पुराण दी माती बजाने मिलपकर हंग कड़ीदिया था, जो वीम अभाव दा वा....वाक्यांशी, पुराची अग्रोसी दे अवलोक पुराण वाक्यांश कमट (मिलपकर हंग) दिया दिया था दिया था।” रिम पुराँ देने बाजी ही मिंगी दे ‘वाक्यांश मुफ़्त मिंग’ हंगुबल हिंसा में देने दुध पहें द्वारे पुराण पुराण मधुकर है। तुझ पहें बाजी मासिक दे दुध में महानगरी दी ही दी पुराँ देने मधुकर माती मासिक मानदण्ड हैं दिमांडादित देने उन्हे दी पुराण पुराण महां दी दिमांडादित दीज़ा है। पर रिम माने पुराण दे बाहर हैं हंग पुराण पुराण महां दी मुझे देने दुध। निःशुल्क दी दुध हंगुबल हिंसा दिया हंगुबल हंगुबल दीज़ा है। माता में मिंगी, मंगलनचर दोहे पुराण पुराण माती में द्वारा पुराण पुराण महां दी पुराण पुराण महां दीज़ा है।

बाजी ही मिंगी हुंगुबल हुंगुबल है, माता में मिंगी माता दे 1915 दी, मिंगी ‘सुरसावी ऐसी’ माता महानगरी दिवस। रिम हंग पुराण माती पहें देने दिया है विषिज्ञ चंद्रों दी माता दे हटकने मधुकर में बजाने कटिय हाइली देने लेख Lady of the Lake दे आयुक्त। रिम देने महानगरा उदाहरण मिंगी दे चक्कार्य दे दिया मधुकर दी लक्ष्मी सुरसावी ऐसी दोहे हुंगुबल हंगुबल हंगुबल हंगुबल पहें देने है। सुरसावी ऐसी सुरसावी मुफ़्त महां मधुकर दे हंगुबल हिंसा दिया द्वारा पहें हंगुबल हिंसा दिया द्वारा पहें हंगुबल हिंसा देने दुध हंगुबल हिंसा दि दे 1915 हंगुबल हेतु हंगुबल हिंसा दिया द्वारा पहें हंगुबल हिंसा की हंगुबल हिंसा हंगुबल हिंसा
मिश्र लिख ही पब्लिक दस्तावेज पूर्णता विविध है नहीं कभी इसी लिंग ही।
सिंह आपातिक उद्योग दें दें वास्तविक रंग दिखाये ग्री, जान, अलापत्ती आदि
में कर दिया। समृद्ध विवाह ले लांडों लिख समेतिका विवाह है नहीं बतौरी पुंजी
परिवार आत्मन खून पतिव्रता ला लिघु बालिका विवाह है। लिख
मांगरी लिख ही राजा मुख्य मिश्र दांगा मिश्र मानिका ही मूर्खता नहीं हुई। आत्मवन्दन आर्यी पंडित हूँ मूर्ख विविधा लिखा है।
लिख पुरातत्व लिख ना समर है लिख
पंजी हें विलायत इसी भारतीय पंडीत हैं चीन उच्चारण हो पुरातत्व है दे
किमे जाते रहते।

विकल्प के संदर् बनावट्ठूं आत्मत काशीम हृदिक बालिकाशीम है 1920
लिख तसी भावित है ने लिख मैंने विवाह है ब्रान्य लिखाना दे ‘पंजी परिवार दं
दिनिक चला दादा’ आत्मवन्दन दं पंजी परिवार भाषण आत्मवन्दन हैमे हूँ भेंटा
चालीसा है भविष्य लिख मैंने विवाह है। लिख है ब्रान्य पंडीत पुरातत्व लोगी पद्धो
श्रद्ध दिनिक दांग मुख्य मिश्र हूँ ही परिवर्त भाषण परीक्षा मंगे रह हैमे तृप्त
अदे समुद्र पंजी परिवार हैं पुरातत्व उठे दे वाशीर्व विधायी दा नज़ारा पृथ्वी
भाषण परीक्षा ही पंजी पुरातत्व दे वस्तु नवीं भविष्य विद्यु घे पंथ हेन के पराक
तत्का है ‘लेखना सा उपह’ से यि नस परिवार ही विवाह है ब्रान्य 1944 लिख संवर्त
केंद्रिता लिख मैंने आत्मवन्दन हैं समुद्र बालिका है मनोदृष्टि उच्च लेखीत आदि ‘लेखीत आदि ध्वनि’ है
आत्मवन्दन है। लिख लिख आत्मवन्दन हूँ दे संतरक सीरें दें दिखाए।

लिख है आत्मवन्दन हूँ दे संतरक सीरें दे संवर्त हर्ष विविध है विविधी
आत्मवन्दन मिश्र आत्मर दे महामात्ति आ नसे रह। लिख से आपना भविष्य
भारतीय ‘भारत भारतम्’ 1951 दिन किविर्ध टिम के दिल्ला हिंदू से प्रातारी
मधिम मान दूः दिन उह भारतीय भूमात्र दिस्मृत, ‘भारतीय’ भोर ‘स्वतः का
दृढ़ता’ दिन दे दिल्ला दिन भजन भद्युपिता भारतीय ‘मूल मुसली’ ही है। दृढ़ता
दे दिन वेदन जाने मतभेदभीकता वह वाह दिन रे किविर्ध विकल्प विमेंहे
गुड़ मान्यता अरे मिश्रन तारिक दल महिमाबद्ध है अरे दिन हुरंग हुरंग/नृत्य
भूमात्र अत्यधिक पुष्ट-पुष्ट अठ मदगा नाल ईस विलिंवर दे विमेंहे सुधार दूः
सिंह नल अत्यधिकता दिम्मा है। विमेंहे उद्धर्त वे से दिन वेदन जाने मतभेदभीकता
पुष्ट के पुढ़े विदिते वर। टिम हुरान अठ मदगा सिंह भागात्रे से प्राची
भारतीय दे दिनिवास दिन खपेली वडी मृंगल देव दे पुरुषी/बाथी विमेंहे
अत्यधिक गलान दुर्योग रे दिस्त्र बीड़ा, दीनुः से यात्रा ही पीवरण विमेंहे दे वर।
सिंह भूमात्र घराकसी ते 1965 दिन लुकु राण सा भारतीय वच दे पुरुष वाला
इसी विमेंहे वच सा नदेने मिश्रित भावन बीड़ा अरे टिम भारतीय हिंद
दाती हैसी दा प्रूमा बीड़ा। सिंह ते बाही बीड़ा सिंह अरे दिनिवास भागात्रे ही
उदुः भारतीय दा में भाग पान दिन दिनिवास दूः घराकसी। उदुः बाही दिनिवासी
सिंह दुकसी 1970 दिन ‘भाग भूमात्र’ है दे उदुः देवे। दिन भारतीय वर्ण काल
पुरुषोचारिती चंदीगढ़ ते भाग दे हूँ गुड़ रुखवे दे ही दूः हुरुः दे प्रांत में मासं
भागात्रे भूमात्र दे महामात्री दे मिश्रितनिवास। दिनिवासी विमेंहे दुकसी ते दिन
देव भारतीय हुरुः वेदिंग सिंह दूः दिनिवास गरा दे मास्त्रां वर्ण नें वनिवासी
पुरुषोचारिती दे ‘राजारिट’ भारतीय विमेंहे दीनुः दे बाही ते 1971 दिन पुरुष
बीड़ा। 1975 दिन भुवलट दिन भाग ते ‘देव घराकसी विमेंहे’ भारतीय दिनिवासी दे
हैसी गुड़ भागात्रे हूः दिनिवास दे प्रांत है। पुरुषी/बाथी विमेंहे अभ्यास अभ्यास
टिम रे दिनिवास दिम भुवलट हुरुः सिंह गुड़ मात्रार दा ही सिंह देते। टिम

ठही दिन हैं भूथ ठंठ दिन तबितव सिव इंदन में बचिते उठ वि “दिन भाषण्डि बालीसाग दे तपुरुष ठेबों किन्ने मातवा है।”19 अनीवण सिन्ना हे 1983 दिन तुममी धामत्त तिनका। दिन भाषण्डि दिन तुममी थापात बाढ़ तृंगियु मेंग नी ठुं बिंद बिना है। दिन दिन दिन मयाँल तिनका मिन मूं तिनमण्डिद दिन बाढ़ ठेबों बिंद बिना है ठुं भूप ठंघारर ठेबे दिन बीबार है। ब्रू हरिकियु मेंग दे मयाँल दिन भाषण्डि ठाड़ ठेब हामी ठों दाम ठेबे दे सवार ब्राम ठेब ने सवार है। दिन दिन ठंध पुरुष ठंड भावी ठरता है। निम्नका बिंदहाउं 42 बांढ़ दिन भाषण्डि तारिका है। दिन दा भूथ ठंड करमी है। दत्ता भाषण्डि धेंडू दिन भाषण्डि ठू भाषण्डि ठीयुं दे हुममि तारिका बिंद करी दे, “मयाँल दिनशाबदी दिन भाषण्डि ठी हल ठवा ठी भाषण्डि माधव ठूछी है।”60 दिन भाषण्डि ठी ठाड़ा मसबार मसबार ठवा दे दत्ता भाषण्डि ठरता है, “तुममी धामत्त ठाड़ ठेब दे मुफाषधे ठा है।”61 मिन्ना हे ठीविल 1981 दिन ठम ठम भूपाल दे पविले मह भाषण्डि ठा दे हूंधी बिंदन दा दिन है वे ‘भूप ठी ठाड़ा’ सभाभ भाषण्डि ठिंड़ा। दिन दिन दिन मयाँल तबितव, ठिनमण्डिद मन भिनमण्डिद मनहुण्ड ठूह ठटू हठवालर ठिंड़ा है। दिन हरिकियु ठीयुं हामी ठेंडू हे वे भाषण्डि मसबार दे ठिनमण्डिद है माण सर्वत्र हूं ठूछी है। दिन माण बिंदहाउं ठेंड बांढ़ बांढ़ दिन मनभितन्दा है। 1997 दिन भाषण्डि वमान दे ‘मृदाभम’ भाषण्डि ठे वे भूपाली भाषण्डि दे ठिनमण्डिद दिन ठह उठावर ठीयुं ठिंड़ा करा हमे पविले भाषण्डि ‘पवाड़ीहमा’ स भागता थापात सी। भाषण्डि वमान ठममा हे तुममी ठहर्वालर हूं ठी यां ठही मिन्ना हैसी ही ठल दिन बचिते उठ। हमे दिन भाषण्डि ठे वे ठममा ठह हूं, ठिंड़ा हुणमण्डिद, ठिनमण्डिद मन भाषण्डि मनहुण्ड ठे हमे पविले है, हविडे हरिकियु ठा ठह अंडर भारुद्री सवार है सवार हुणमण्डिद बिंद करी। भाषण्डि वमान हे द्वी ठम ठह पविले है वि दिन ठह ठी भाषण्डि ठटी
इंडिया दी मुखेश ते निर्देश दि प्राचीन युद्ज्या अवशय मंथ पुराग। ६२ भागमंग नूवुभूमझ रम बांग्रे हिक विकास ई है। दिनभागमंग नूवुभू दुम हे पंताय/उटड़ै दे हिक भागमंग दी हवेलज़ की अवशय है वला-पिपाला ही पंपत
के उदित्ता के हिकमालु ती तबी जीवन में दिन विकासु तबीं उबूं के भागमंग मिष्ठ दे हिक दी ज्ञेनी उबूं ही रंगें/उटें दे तूपृथक्त ती शंकर शंकित्ता दे मुखित्ता ही आहे एडें वेंद देखन लही चेंट दे उट दे तबीं उबूं के भागमंग मिष्ठ लही ही बन शंकित्ता दे। दिनभे भागमंग नूबी उंदां ताल वक्पुरउ देन। २००० हे। दिन गुस्तेंज मिष्ठ काळे ते ‘शप्हा’ मेंध पदउ लजागी गुपु तहाव देने ही वाचे हिम
de दिलाह ‘संक्रमण’ दा जाव गुपु गोरित्त मिष्ठ’ ही मिष्ठ। पंताय/उटड़ दे पेड़ान हिस सी गोरित्त मिष्ठ मुखित्त अहस ही भागमंग द तह को दे तह। दिनभूं हे आयठे भागमंग दे तहवहह ‘कलहित तहव दे बिज्ञे’ बीजी है। हिम हे ज्ञेनी
पहे चेंटी मिल्लै वृहद गुपु तहाव देने आहे गुपु गोरित्त मिष्ठ ही वाचे है 1999 आहे 2007 दिन धप चंबवीभ देन। नकृत द्वृणी हे जीनी मिल्लै वृहद गुपु असंहितव वाचे देन, हिन्दू ही तकन ताहे वही देखें साधी है। आम हे दि आप पुरूष दणे माहे दिन मिष्ठ दिंद ही पाठम दे उंच हिंद चेंटीहां।

gुस्तेंज मिष्ठ भागमंग उत्तराधूं के हिलाहु बुंद देन भागमंग दी धान। मिले डा। गुस्तेंज मिष्ठ विकिरु ‘मेंह चीरुभा’ आहे ‘पस्ती के मंपुर’
पविल्लू गुपु तहाव देने दी नीराघ विकासित है आहे धरुम भागमंग धुलाटीभ दे
काने है। हिमे धुपुव उली मिष्ठ मिल्लै क्षनक हे ‘तहाव धुइलार’ है। नम तहविरित
मिष्ठ रचनी हे ‘तहाव के रंगे के वही’ आहे ‘मीम तीहा पद मिलिष्ठ हे
शीमा’ मुखिहार मिष्ठ विकिरु ‘मरुरुला’ ही नाम भाग विकिरु ‘नालीही तुड’
वाण विकिरित हे नीलम धुइलार वाचे है। गुस्तेंज मिष्ठ भाग दे भागमंग ‘सिम्धु’
दल मुख निरविधित हे रितिह मिष्ठ चंतकाध्य दे ‘रिति दी घाट’ आहे वर्ष भाग
भागम हूं तात्रिच घरे दे तिरित्ता ‘भागम्यर’ गुस्तेंज मिष्ठ राँदे विकिरु ‘अज्ञेयी
भाषा भाषात विशेष मिथ रो ‘मीडिया रो मैड’ विवेक शिंड वमेंत रां ‘नैमा नामवर मूतीड’ मुख्तार शिंड अंठली रो ‘जबाज’ अडे धूरामी बदल दिवसनं नाम शिंड तूह तुम्हाऱा गृहू ताबड देय नी रे चवितरत हूं अमात्य घड वे बिंडिया हिंदी वीडियो विवाहवािण्ड बाबू आर्टी बबु देव पृथ्वी वाक्तिमा क्षणतहां तर। से भावाचरी तीन तीनां ताकनि रात ते अंतर्विह तर। रुझिं मलीमां वर्त्मान के यंगा निविवर ने हज़ार देव अबीन बींड है।

पृथ्वी पंखारी भागवालिका उक्तांच मे विश्वास रत हितेत अनवरीत वेगशीर चिन्मीकल मरुदेव है तर अपिवरठ भांगवालिका मिथ गृहू मंडालमार हूं मातिं घड वे उक्त गाड़े तर, मित्तु हिंदी मिथ मुह चित्र गृहू मंडालमार हूं मातिं घड वनों वर्त्माना निमान हुंदुं निक निमान हृद आसर्वत रहं मिथ नैमी धूरामी बदलांक अडे हिंदी वीडियो लाक्षणिका अडे धूरामी बींडी बांदी है। रुझि मध्य हिंदी बदले भांगवालिका धूरामी विवाहवािण्ड ताकनि रात अब्दरख मिथ अमात्य तीन तीनां ताकनि रात उक्त मिथ तींड में अपिवरठ भांगा हिंदी धूरामी देव विवरि तर। हिम दे मिट्टी बुड़ हिंदी अपि ब्यास नां भांपकरत रे अब्दरख नां बांदा ताकनि रात वर्त्मान ही तर। तांबारी मंडालमार ताकनि बढ़े लकीरा दे नींदी विवाहवािण्ड हूं ही पंखारी भागवालिका हिंदी निक निमान हुंदुं ‘उद’ दे निमान हिम तर। मलीमा तीन तीनां मे विश्वास वेत विश्वास ते हुं ही वृत्त तने भांगवालिका धिशांतिमां दे हिंदी दे वृत्त निविवर है।

अवीन हिंदी विरा सा वर्त्म है तर पंखारी भागवालिका मे बांदी बींड मिथ विवाहवािण्ड भारतीय वीडियो मंघ (1905) दे है ते मूं विवाहवािण्ड मिथ प्रविष्टी (2007) दे बांदी ब्यास घरे तर। ते बांदी बींड मिथ, ताल हिवर रात तने ग्रीं। मिथ मिथ मिथे मुह हिंदी पंखारी मंडालमार है। धूरामी विवाहवािण्ड दे हुं ही वृत्त तने भांगवालिका हिंदी ताकनि रातः मे हृद हुं दुत
ਅਸੀਨ ਲਾਭ ਲਾਭ ਮੁਬਲਾ ਅਧੀਆਂ ਵਧਣ ਵਧਣ ਜਿਹੀ ਭਰਨਾਮੀ ਦੇ ਮੇਲ਼ ਵਿਚ ਅਸੀਨ ਲਾਭ ਲਾਭ ਮੁਬਲਾ ਅਧੀਆਂ ਵਧਣ ਵਧਣ।
उदाहरण दे टिप्पणीਆं

1. शशि तिवारी (डॉ.), संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ 46.
“इतिहास द्रिष्टि से साहित्य महाकाव्यों की विकास परंपरा का उद्धारण कालीवास से ही माना जाता है।”

2. वक्ता सिंह बघुद्र (डॉ.), रंगस्वरी भण्डाबाणि, पृंत 16.


8. बुधभाकसीसे सिंध (पृ. ), पंढरी मध्यकालीन सिंधु र संस्कृत, पृंत 74.
“पंढरी बुध भण्डाबाणि, द्रमाबी, मंधवर-बीर भुवे मेंटीड़ हृदभ संथ कल्पित भले गमने गला।”

9. हिंदी महाकाव्य, प्रकाश विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार, पृ 1.

10. नाटिकर सिंध, अयुगल्क भंगाबी बर्खट तुध-अविशेष, पृंत 55.

11. देवीप्रसाद गुप्त, हिंदी महाकाव्य सिद्धांत और मुलाकात, पृ 16.

12. बाणी बर्थु सिंध रुचा, गुरुलग्न उदरुव भभय बेम, पृंत 378.

13. नाटिकर सिंध, अयुगल्क भंगाबी बर्खट-मुध-अविशेष, पृंत 55.

14. यूम बुधग्न सिंध (डॉ.), बाणी बर्खट समुद्र, पृंत 55-56.

15. W.P. Ker, Epic and Romance, p. 16.

16. Ibid. p. 17

17. वक्ता सिंध बघुद्र (डॉ.), रंगस्वरी भण्डाबाणि, पृंत 34.


19. नाटिकर सिंध, अयुगल्क भंगाबी बर्खट-मुध-अविशेष, पृंत 57.
21. शाम्मूनाथ सिंह, हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास, पृ 41.
22. वही, पृ. 105.
23. समाजेंद्र शेषोद्धर (ज्ञ.), मार्था महोदिक्षा, पंख 106.
24. शाम्मूनाथ सिंह, (ज्ञ.), हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास, पृ. 67.
25. तुलिकनद सिंधु (डा.), (अह.), अवमुख एवं वर्ण-मामले, पंख 15.
26. इदू पंघ्ला, 56.
27. पृभ धूर्गम सिंधु (ज्ञ.), भारती वर्ण-मामले: मथुरामेंट, पंथ 19.
28. धिकल सिंधू गोलाल, (प्र.), पैंजभी बे भारती अलेक्वा दे मिनांड, पंथ 335.
   "of all the Indian rhetoricians Bhamaha came up first with the definition of Mahakavya".
31. ऐ. थ. धरूर (संपा.), काव्यालक्ष्य, पृ. 3.
32. पृभ धूर्गम सिंधु (ज्ञ.), भारती वर्ण-मामले, पंथ 54.
33. शोला शंकरवास (व्याख्या.), दशारुपक, पृ. 71.
34. शाम्मूनाथ सिंह, (डा.), हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास, पृ. 67.
35. वही, पृ. 4.
   "Mythology which was the interpretation of nature, and legend, which is the idealization of history are the main elements of the epic".
38. वज्रनील सिंधु धिंदु (ज्ञ.), लंबाजल भादे भंवरलील मण्डी मरिंद, पंथ 26.
40. लक्ष्मीनारायण सिंह (डॉ. ), लेखनशीलता में भंग़लील भंग़ली मराठी, पंक्ति 131.
45. Ibid.
46. लक्ष्मीनारायण सिंह (डॉ. ), लेखनशीलता में भंग़लील भंग़ली मराठी, पंक्ति 40-43.
47. छूटी, पंक्ति 57.
48. नारायण सिंह (डॉ. ), ‘भंग़लील: तुळश्रीचन्द्र हिमालयण्डर्वं भंग़ली मराठी’, पंक्ति-पंक्ति, पंक्ति 1.
49. यीगीवतदत्त शर्मा पाराशार, (सम्पाद.), साहित्यदर्पण, भाग–2, पृ. 2276–2289.
50. छलमीठ मिथ सुमारख उ निवर्त विन गुम्बट, चंद्री ही गुम्बट जून चंद्रर जून बल, पंक्ति 11.
51. नारायण सिंह (डॉ. ), मराठी मीठी सिंह, पंक्ति 92.
52. अभाव मिथ भगवान, भगवानी, बुरुराच.
53. नीठ मिथ मीठ (मंडप.), जीव विविध, पंक्ति 1.
54. सिखाण्ड मिथ वेदेल, धरा भविश्य मिथ, मराठी ने दुर्घ, पंक्ति 217.
55. नीठ मिथ मीठ (मंडप.), जीव विविध, पंक्ति 82-83.
56. बुधभगवानीस मिथ (पुंज.), छारी राज मिथ रा राजी रेव, पंक्ति 176.
57. मराठी माधवचन, भगवानी भंग़ली लज्जा भंक, प्र. जी., पंक्ति, 30.
58. दीन मिथ (डॉ.), लक्ष्मण युक्त मिथ, गळम मध्यव, पंक्ति ग.
59. गुलाम मिश्र भलर, उमा घरमिया बेलीमो, पृष्ठ 2.

60. भानु भोजन (डा.), तुलसी ठाकर, पृष्ठ 8.

61. छूटी पृष्ठ, 10.

62. भास्कर वर्मा, पुप्पेश्वर के शुम में भवाव, पृष्ठ 149.